रासलीला

प्रेम का मण्डल

'भागवतपुराण' की एक कथा पर आधारित

भाग चार :
राधा के लिए सीख

यह सच था कि भगवान कृष्ण राधा के साथ उस वनमार्ग से निकले थे, और यह भी सच था कि जब राधा थक गईं तब कृष्ण ने उन्हें उठा लिया था और अपनी बाहों में लेकर आगे बढ़े थे। उस रात्रि को, जब राधा अन्य सभी गोपियों के साथ नृत्य कर रही थीं, तब कृष्ण देख पा रहे थे कि वे प्रेमभाव में पूरी तरह डूब चुकी हैं। और इसके बदले में उन्हें कुछ भी पाने की चाह नहीं थी। अन्य कृष्णों के ओझल होने पर उनके आस-पास की गोपियाँ जब निराशा से रो-चिल्ला रही थीं, तब राधा अपनी प्रेमानुभूति में इतनी खोई हुई थीं कि उन्हें अन्य किसी चीज़ का भान ही नहीं था। और इस विशुद्ध भक्ति को देखकर, भगवान उन्हें इस अनुभव की और भी गहराई तक ले जाना चाहते थे। उन्होंने राधा का हाथ थामा और चमकीली रेत से होकर चाँदनी में चमचमाते वन में अपने साथ ले गए। जब वे थक गईं तो कृष्ण ने उन्हें गोद में उठा लिया और आगे चलने लगे। अब तक, राधा सारी सुध खो बैठी थीं कि वे कौन हैं और कहाँ हैं। यह ऐसा था जैसे वे अत्युत्कृष्ट परम आह्लाद के कोष के अन्दर थीं जो समय और स्थान से परे था।

कुछ समय बाद, जब वे दोनों एक पेड़ के नीचे आराम कर रहे थे तब राधा को यह सुध आई कि वे कहाँ हैं। उन्होंने अचम्भित होकर श्रीकृष्ण की ओर देखा। भगवान के नेत्र अनन्तता के सरोवर समान थे जो राधा को गहरे, और गहरे ले जा रहे थे; ऐसा लगने लगा कि राधा ब्रह्माण्ड के मूल स्रोत तक पहुँच गई हों। उस क्षण वे समझ गईं। वे कह उठीं, "वे सचमुच सर्वव्यापी ईश्वर हैं! और वे समस्त संसार को अपने प्रेम से सराबोर करते हैं!" और फिर यह विचार कौंध गया, "और बस मैं ही हूँ जिसने इस बात को जान लिया है, क्योंकि मैं उनसे इतना प्रेम जो करती हूँ।"

इस विचार के आते ही, उनका आनन्द लुप्त हो गया। श्रीकृष्ण जा चुके थे और वे वन में अकेली रह गई थीं, उनका साथ देने के लिए कोई अन्य स्त्री भी नहीं थी। अब राधा एक गहन वेदना से व्यथित हो गईं।

“कृष्ण, मेरे प्रियतम, मेरे नाथ, आप कहाँ चले गए?” वे पुकारने लगीं।

तब राधा को घण्टी की आवाज़ की तरह सुस्पष्ट, कृष्ण की आवाज़ सुनाई दी, अपने ही अन्तर में।

“मैं कहीं खो नहीं गया हूँ। मैं बस छिप गया हूँ। अब तुम्हें, और बाक़ी सभी को मुझे ढूँढ़ना होगा।”

कुछ क्षणों बाद, उन्हें नीचे के रास्ते से गोपियों की आवाज़ें सुनाई दीं, और फिर वे सभी राधा को घेरकर उनके इर्द-गिर्द खड़ी हो गईं। कुछ को सन्देह था कि उन्हें पता होगा, कृष्ण कहाँ हैं। कुछ अन्य देख पा रही थीं कि राधा भी उन्हीं की तरह वियोग की पीड़ा में हैं और उन्हें उन पर दया आ रही थी। राधा ने वे आख़िरी शब्द दोहराए जो कृष्ण ने उनसे कहे थे,

“मैं कहीं खो नहीं गया हूँ। मैं बस छिप गया हूँ। अब तुम्हें, और बाक़ी सभी को मुझे ढूँढ़ना होगा।”

यह सुनकर सभी गोपियाँ जान गईं कि कृष्ण उनके साथ ठिठोली कर रहे हैं। यह उनकी एक और लीला है और वे उन्हें अवश्य ही ढूँढ़ निकालेंगी।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।